डॉ० कविता कुमारी सि

हिन्दी विभाग
आर० एन० कॉलेज, हाजीपुर

B.A. III, प्रतिष्ठा

विषय - प्रेमचन्द ने 'पूस की रात' कहानी किस उद्देश्य से लिखी है ?

प्रेमचन्द की कहानियाँ यथार्थवा

हैं। वैचारिक दृष्टिकोण से वे आदर्शवादी हैं, प
उनकी कथाएँ यथार्थवादी अधिक हैं। इस कहानी
उद्देश्य तत्कालीन सामाजिक यथार्थ का चित्र
था। 'पूस की रात' हमारी सामाजिक अर्थ-व्यव
में व्याप्त विसंगतियों की ओर हमारा ध्यान
रती है। यह हमें उन मेहनतकश मजदूरों की
जाती है जिसके पसीने की आग में पककर
स्वर्ण-महल की ईंटें तैयार होती हैं।'
सबके लिए एक चुनौती है जिनके श्राय
की रात गरमी से अकुलाती र
र गर्मी की रात में ठंडे की आह
। प्रेमचन्द की इस कहानी यथा

सामाजिक व्यवस्था की दशा में सुधारवादी कदम उठाने का गंभीर संदेश देता है।

प्रेमचन्द ने गाँव के किसानों की दरिद्र की तस्वीर दिखाकर हमें उनकी हालत सुधारने के लिए प्रयास करने को मजबूर कर दिया है। गाँव का अधिकांश किसान भी ऋणग्रस्त है, उनकी माली हालत अच्छी नहीं है। उनकी तबाही का कारण इस तरह उनपर किए गए मनमानी अत्याचार है। यदि हम भारत को उन्नत बनाना चाहते हैं तो किसानों की हालत सुधारनी होगी।

दूसरी समस्या देश जमींदारी के शिकंजे में जकड़ा हुआ था। किसान को जमीन का मालिकाना हक नहीं था अंग्रेज सरकार इन जमींदारों के द्वारा वसूली करती थी। किसानों का शोषण जमींदार करता था। सामाजिक बन्धन

कथा दूसरा किसान अत्यन्त दयनीय स्थिति से
जीवन - यापन कर रहा था। ये अशिक्षित किसान
बड़ी ईमानदारी से अपना जीवन व्यतीत किया
करते थे। वे अथक परिश्रम किया करते थे, परन्तु
रोटी के मुहताज होकर जीते थे। स्वतंत्रता
संग्राम में उनका बहुत बड़ा सहयोग था। अंग्रे
हुकूमत के विरुद्ध उनकी अन्तरात्मा चित्कार क
उठी। सूदखोरों की शरण में जाना उनकी लाच
सूदखोर मनमाने ढंग से ब्याज वसूला कर
थे। उनका शोषण चहुँमुखी रूप से हो रह
किसानों की जिन्दगी अभावों से ओत-प्रोत
सारी जिन्दगी कर्ज के भार से दबी रहती
सूदखोरों और जमींदारों की जिन्दगी विल
से यापन हो रही थी। किसानों की कमजो
में उनकी अशिक्षा सबसे बड़ी शत्रु थी
ऐसे अभिशाप समाज में ज
होने वाला कथाकार भला क्यों न संवे

होगा। 'पूस की रात' उस अभिशप्त समाज की एक जीवन्त कथा है।

कहानी का केन्द्रीय पात्र हल्कू की आर्थिक स्थिति दयनीय है तथा महाजनों और जमींदारों की शोषण करने की प्रवृति है। कथाकार प्रेमचन्द ने सामाजिक विषमता को केन्द्र में रखकर कथा की रचना की है। किसानों की आर्थिक तंगी, महाजनों की शोषण-प्रवृति और सामाजिक उपेक्षा को उजागर करते हुए उन्होंने एक स्वस्थ समाज की रचना के लिए प्रेरणा प्रदान की है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सम्पूर्ण कहानी में यथार्थ का पक्ष प्रबल या केवल यथार्थ ही यथार्थ है, आदर्श यथार्थ के पैरों से दबकर-कुचलकर रह गया है।